भाषा औरलिपि

पालि भाषा – देवनागरीलिपि

वर्ण परिचय

४१ वर्ण ः ८ स्वर, ३३ ˉयंजन

८ स्वर

अ आ इ ई उ ऊ ए ओ

îहस्व स्वर ः अ इ उ

दीर्घ स्वर ः आ ई ऊ ए ओ

ए तथा ओ का उच्‍चारण ः îहस्व या दीर्घ

ए ः देव, केवल, खेत्त, मेत्ता

ओ ः लोक, मोह, फोट्ठब्ब, पोत्थक

३३ ˉयंजन ः वर्गीय तथा अन्य ˉयंजन

वर्गीय ˉयंजन

क-वग्ग (कंठˉय) ः क ख ग घ ङ

च-वग्ग (तालˉय) ः च छ ज झ ञ

ट-वग्ग (मूर्धन्य) ः ट ठ ड ढ ण

त-वग्ग (दंतˉय) ः त थ द ध न

प-वग्ग (ओष्‍ठˉय) ः प फ ब भ म

(घोष – अघोष)

अन्य ः य र ल व स ह ळ

“ं ” (अं) -निग्गहीत

अनुस्वार तथा अनुनासिक ˉयंजन

हिंदी में ः अनुस्वार याबिंदु का प्रयोग

पालि में ः अनुनासिक ˉयंजन

हिंदी पालि

गंगा गङ्गा

पंच पञ्‍च

पंडित पण्डित

बंधन बन्धन

संबोधि सम्बोधि

संसार संसार

एवं, बुद्धं, सरणं

संयुक्त ˉयंजन

वर्गीय ˉयंजन तथा अन्य ˉयंजन

क-वग्ग (कंठˉय) ः क ख ग घ ङ

क + क = क्‍क (सक्‍क) क + ख = क्ख (दुक्ख)

ग + ग = ग्ग (सग्ग) ग + घ = ग्घ (ब्यग्घ)

ङ + क = ङ्क (अङ्क) ङ + ख = ङ्ख (कङ्खा)

ङ + ग = ङ्ग (मङ्गल) ङ + घ = ङ्घ (सङ्घ)

त-वग्ग (दंतˉय) ः त थ द ध न

मेत्ता सत्था सद्द बुद्ध सन्त वन्दन बन्धन पसन्‍न

संयुक्त ˉयंजन

वर्गीय ˉयंजन तथा अन्य ˉयंजन

अन्य ः य र ल व स ह ळ

भिय्यो विपस्सना स्वे सल्‍ल

तत्र दळ्ह उण्ह ब्राह्मण

शब्दकोश

क्रम

 स्वर ः अ आ इ ई ...

 ˉयंजन ः

क ः क का कि की कु कू के को

ख ः ख खा ...

ग ः ग गा ...

संयुक्त ˉयंजन ः वर्णों के क्रम के अनुसार

अभिण्ह, उपस्सय,निस्सट्ठ, पवत्ति, यञ्‍ञ, वादी, सुच्छन्‍न

पालि शब्दों का उच्‍चारण

 हलंत नहीं – पूर्ण उच्‍चारण

 श ष

 अं

 संयुक्त ˉयंजन

ङएमो थएससए ....

भुददहएम̣ सएरएन̣एम̣ ...

ंएनोपुबबएन̇गएमā दहएममā ...

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स।

बुद्धं सरणं गच्छामि।

धम्मं सरणं गच्छामि।

सङ्घं सरणं गच्छामि।

१. मनोपुब्बङ्गमा धम्मा, मनोसेट्ठा मनोमया।

मनसा चे पदुट्ठेन, भासति वा करोति वा।

ततो नं दुक्खमन्वेति, चक्‍कंव वहतो पदं॥

२. मनोपुब्बङ्गमा धम्मा, मनोसेट्ठा मनोमया।

मनसा चे पसन्‍नेन, भासति वा करोति वा।

ततो नं सुखमन्वेति, छायाव अनपायिनी॥

ध्वनि परिवर्तन

कर्म – कम्म धर्म – धम्म मार्ग - मग्ग

सूर्य – सुरिय आचार्य – आचरिय आर्य - अरिय

ऋ – इ, उ ऋण – इण, ऋषि – इसि, ऋतु - उतु

कृृत – कत, मृत – मत

ऐ – ए, औ – ओ

वैशाली – वेसाली, गौतम – गोतम, औषधि – ओसधी

ध्वनि परिवर्तन

क्ष – ख ज्ञ – ञ

भिक्षु –भिक्खु, चक्षु – चक्खु,

क्षुधा – खुदा, क्षेम – खेम, क्षीर - खीर

विज्ञान -विञ्‍ञाण, प्रज्ञा - पञ्‍ञा, ज्ञान – ञाण

श्रेष्‍ठ - सेट्ठ, कनिष्‍ठ - कनिट्ठ,

हस्त - हत्थ, शास्ता - सत्था,

पुष्प – पुप्फ, पुष्करणी - पोक्खरणी

‘य’ के साथ संयुक्त ˉयंजन

त वग्ग ः (त थ द ध न/ण) + य

च वग्ग ः च्‍च च्छ ज्‍ज ज्झ ञ्‍ञ

नृत्य – नच्‍च, कृत्य –किच्‍च,

मिथ्या –मिच्छा,

मद्य - मज्‍ज, विद्या –विज्‍जा,

मध्यम – मज्झिम, बोध्यंग - बोज्झङ्ग

अन्य - अञ्‍ञ अरण्य - अरञ्‍ञ श्रामण्य - सामञ्‍ञ

क्‍वएम̣ मे सुतएम̣ –ेकएम̣ सएमएयएम̣ बहएगएवā सāवएततहयिएम̣ वहिएरएतi

जेतएवएने एनāतहएपनि̣द̣किएससए āरएāमे. थएतरए कहो बहएगएवā बहकिकहū

āमएनतेसi– “बहकिकहएवो”तi. “भहएदएनते”ततेि बहकिकहū बहएगएवएतो

पएचचएससोसुम̣. भहएगएवāेतएदएवोचए -

एवं मे सुतं – एकं समयं भगवा सावत्थियं विहरति

जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तत्र खो भगवा

भिक्खू आमन्तेसि – ‘‘भिक्खवो’’ति। ‘‘भदन्ते’’ति

ते भिक्खू भगवतो पच्‍चस्सोसुं। भगवा एतदवोच –